जाता। श्रीभगवान् के अनुग्रह से योगी को बारंबार ऐसे अवसरों की प्राप्ति होती है, जिससे वह कृष्णभावना में पूर्ण सिद्धि-लाभ कर सके।

पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।।४४।।

पूर्व=पिछले; **अभ्यासेन**=अभ्यास से; **तेन**=उस; **एव**=ही; **ह्रियते**=आकर्षित होता है; **हि**=निःसन्देह; **अवशः**=असहाय हुआ; **अपि**=भी; **सः**=वह; **जिज्ञासुः**=जानने का अभिलाषी; **अपि**=भी; **योगस्य**=योग का; **शब्दब्रह्म**=शास्त्र के कर्मकाण्ड का; **अतिवर्तते**=उल्लंघन करता है।

अनुवाद

पूर्वजन्म के भगवद्भाव (बुद्धियोग) के प्रभाव से वह अपने आप योग की ओर आकृष्ट हो जाता है। योग के लिए प्रयास करने वाला ऐसा जिज्ञासु योगी भी शास्त्र के कर्मकाण्ड का उल्लंघन कर जाता है।।४४।।

तात्पर्य

उच्च योगी शास्त्रीय कर्मकाण्ड में अधिक आसक्त नहीं होते; परन्तु वे योग के प्रति अपने-आप आकृष्ट हो जाते हैं, जो उन्हें सर्वोच्च यौगिकसिद्धि—कृष्णभावना में आरूढ़ कर सकता है। श्रीमद्भागवत (३.३३.७) में भी कहा है कि सिद्ध योगी को वैदिक-कर्मकाण्ड की अपेक्षा नहीं रहती:

अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान् यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम्।
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते।।

'हे प्रभो! जो आपके पावन नामों को ग्रहण करते हैं, वे चाहे चाण्डालकुल में ही क्यों न उत्पन्न हुए हों, पर उनका परमार्थ सफल हो चुका है। आपका नाम लेने वाले निःसन्देह सम्पूर्ण तप, यज्ञ, तीर्थस्नान और शास्त्र-स्वाध्याय कर चुके हैं।'

इस भक्तिसिद्धान्त का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण श्रीमन्महाप्रभु चैतन्य देव ने ठाकुर हरिदास को अपना परम अंतरंग शिष्य बनाकर प्रस्तुत किया है। ठाकुर हरिदास मुस्लिम कुल में जन्मे थे, पर श्रीचैतन्य महाप्रभु ने उन्हें नामाचार्य पद पर आरूढ़ कर दिया, क्योंकि वे नित्यप्रति नियम से **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे**—कृष्णनाम का तीन लाख बार जप करते थे। उनके अजस्र नामकीर्तन से स्पष्ट है कि पूर्वजन्म में उन्होंने 'शब्दब्रह्म' नामक वेदों के सम्पूर्ण कर्मकाण्ड का पारगमन कर लिया था, क्योंकि हृदय-शुद्धि हुए बिना कोई भी कृष्णभावना को धारण नहीं कर सकता और न भगवन्नाम **हरे कृष्ण** कीर्तन में ही संलग्न हो सकता है।

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।।४५।।